Volume-2, No. II, Aug-2015, pp. 118-120

मूल्याधारित शिक्षा का मानव व्यवहार पर प्रभाव 'वेदों' के अनुसार

श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा
वीरखेडा इन्टर कालिज वीरखेडा बुलन्दशहर उ.प्र. भारत।

शिक्षा किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति का अनिवार्य अंग है। शिक्षा के द्वारा न केवल व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी शिक्षा से ही होता है। शिक्षा ज्ञान की साधना है। ज्ञान आत्मा का प्रकाश है। शिक्षा के उद्देश्य मनुष्य जीवन के उद्देश्यों से भिन्न नहीं है। शिक्षा एक प्रणाली है जिससे जीवन के उद्देश्य प्राप्त होते हैं। शिक्षा मानव की उन अन्तर्निहित शक्तियों, कुशलताओं एवं गुणों का विकास करती है जिनसे वह अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है। मानव जीवन का लक्ष्य है ''धर्माचरण के द्वारा अर्थ और काम पुरूषार्थों की साधना करते हुए परमपुरूषार्थ 'मोक्ष' अर्थात् सत् चित् आनन्दस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति करें'' वैदिक शिक्षा की दृष्टि से विद्या का मुख्य उद्देश्य भी यही बताया गया है **''सा विद्या या विमुक्तये''** इस परम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु व्यावहारिक पक्ष की शिक्षा भी आवश्यक मानी गयी है।

ईशोपनिषद् में कहा है–

विद्यां चा विद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।[1]

अन्धंतमः प्रविशन्ति ये विद्यामुपासते। ततोभूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।।[2]

भारतीय विद्वानों की दृष्टि में शिक्षा का लक्ष्य जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण है। शिक्षा मानव को शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, आन्तरिक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करने वाली हो, इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इसे हमने 'मूल्याधारित शिक्षा' कहा है जिसके अन्तर्गत शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा आदि समस्त विधाओं का समावेश है।

उक्त सन्दर्भ को दृष्टिगत रखते हुए मैंने अपने शोध–पत्र का विषय ''मूल्याधारित शिक्षा का मानव व्यवहार पर प्रभाव : वेद के सन्दर्भ में'' बनाया है।

प्रत्येक बीज में अपनी प्रकृति के अनुसार उगने–फूलने–फलने आदि की क्षमता व योग्यता होती हैं यदि उसे भूमि, जल, खाद तथा सुरक्षा आदि का उपयुक्त वातावरण मिल जाता है तो वह अपनी प्रकृ ति के अनुसार फूल–फल आदि की उत्पत्ति करता है। यदि उसे विपरीत वातावरण मिलता है तो उसका विकास ही अवरूद्ध नही होता, अपितु उसकी प्रकृति भी बदल जाती है। ठीक उसी प्रकार प्रत्येक मानव अपने पूर्व जन्मों के अनुसार कुछ गुणों (संस्कारों) के साथ संसार में अवतरित होता है। उत्पन्न होने पर यदि उसे समुचित वातावरण उपलब्ध हो जाता है तो मानव से महामानव (देवता) बन सकता है। यदि उसे विपरीत वातावरण मिलता है तो वह मानव से दानव भी बन सकता है। इस प्रकार मानव के विकास में उसके जीवन के प्रारम्भिक लगभग 20 वर्षों की शिक्षा–दीक्षा उसके भावी जीवन की दिशा का निर्णय करती है। आज संसार के प्रत्यके देश के सामने यह एक समस्या है कि वह अपने युवक–युवतियों को किस प्रकार की शिक्षा दे, जिससे उनका नैतिक मूल्य ऊर्ध्व गति का हो, वे अपना जीवन सदाचरण से युक्त एवं उन्नत बना सकें।

भोगप्रधान प्राश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण यद्यपि आज शिक्षा का उद्देश्य धनोपार्जन पर सिमट कर संकुचित हो गया है तथापि शिक्षा का उद्देश्य बहुत विस्तृत है। इस विषय में सार्वदेशिक–सार्वकालिक आदि ज्ञान वेद आज के मार्गविचलित–दिग्भ्रमित मानव समाज का मार्गदर्शन करने में समर्थ है।

आहार–निद्रा–भय–मैथुनं च समानमेतत्पशुभिर्नराणाम्। ज्ञानं हि तेषामधिको विशेषो ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः।।

भोजन, नींद, डर और संतानोत्पत्ति ये सब मनुष्य और पशुओं में समान होते हैं, परन्तु ज्ञान केवल मनुष्य को ही प्राप्त हो सकता है। मनुष्य में करूणा, दया, ज्ञान, प्रेम तथा धर्मभावना आदि गुण होते हैं। मैं कहां से आया? क्यों आया? मुझे कहां जाना है? मेरे आने–जाने अर्थात जीवन का उद्देश्य क्या है? आदि प्रश्न उसके मन में उठते रहते हैं और इन प्रश्नों के उत्तर ढूढंने का वह अपनी सामर्थ्य (ज्ञान) के आधार पर प्रयत्न करता रहता है, इससे उसका ध्यान अपने आचरण पर जाता है। आचरण उसके संस्कार से युक्त अर्थात नियन्त्रित होता है। 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु स करण भाव में (घञ्) प्रत्यय करके भूषण अर्थ में 'सुट्' करके संस्कार शब्द बनता है। इसका विग्रह है 'संस्क्रियतेऽनेन अथवा संस्करणं संस्कारः।[4] मनुष्यों

के विषय में संस्कार का अर्थ है दुरितों से दूर रहना (दुःख, दुर्गुण और दुर्व्यसन) अपने में अपेक्षित गुणों का निर्माण करना तथा अपने में कमियों की पूर्ति करना।[5] मरूस्थलीय मनुष्यों के आचार हिमस्थलीय मनुष्यों के आचार जैसे नहीं हो सकते। मैदानी क्षेत्र में रहने वालों के आचार पहाड़ी क्षेत्र के निवासियों से भिन्न होते हैं। देश–भेद और काल–भेद से एक ही मनुष्य में खान–पान, रहन–सहन और वृत्ति–व्यवहार में भिन्नता आना स्वाभाविक है। इस प्रकार मनुष्य के परिवेश (देश–काल–पर्यावरण) का उसके आचरण पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः पारिस्थितिकी–शास्त्र (Ecology) का मानव–आचरण के साथ गहरा सम्बन्ध है। इसी प्रकार भौतिकी, रसायन, वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान तथा मनोविज्ञान आदि का मनुष्य के आचरण के साथ घनिष्ट सम्बध है, अर्थात

''शिक्षा समझो वही सफल, जो करदे आचार विमल''

''शिक्षा मानव की अन्तः प्रकृति को जगाने का एक प्रयास है।''

प्रकृति के जग जाने पर या चरित्र निर्माण हो जाने पर अन्य कार्य अनायास ही पूर्ण हो जाते हैं।''

''शिक्षा का अर्थ है पूर्णता की अभिव्यक्ति, जो सब मनुष्यों में पहले से ही विद्यमान है''– (स्वामी विवेकानन्द)

खानपान भ्रष्ट होने से ही पढ़े–लिखे बड़े–बड़े नेता–विद्वान उच्च पदासीन भी भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाते हैं। अपने को राष्ट्र का कर्णधार कहने वाले भी राष्ट्रहित की उपेक्षा करके स्वार्थलिप्त नितान्त भ्रष्ट आचरण करते हैं। ये तथाकथित शिक्षित जब भ्रष्टाचार में लिप्त होकर विपरीत आचरण करते हैं तो भयानक राक्षस बन जाते हैं। इसके लिए उदाहरण की कोई आवश्यकता नही है। दूरसंचार, समाचार आदि साधनों के माध्यम से हम दिन–प्रतिदिन आजकल के साधुओं के बारे में पढ़ते और सुनते रहते हैं। कहा है–

''साक्षराः विपरीताश्चेत् राक्षसा एवं केवलम्।''

आज जो मानव के प्रति प्रेम का अभाव संसार में दृष्टिगोचर हो रहा है इसका मूल कारण संस्कार–विहीनता है। विश्व–बन्धुत्व–भावना भी संस्कार से ही पुष्ट होती है। अंग्रेजी के एक सुभाषित के अनुसार–"Education without character is not only useless but positively dengerous".

वेद ने भौतिक उन्नति तथा अध्यात्म का समन्वय करते हुए कहा है कि अविद्या (भौतिक विज्ञान) से मृत्यु–भोतिक कष्टों को पार करो और विद्या (अध्यात्मविद्या) से मोक्ष की प्राप्ति करो। 'विश्व के लब्ध वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्स्टाइन ने भी कहा है कि– "Science without religion is live and religion without seine is blind". अतः शिक्षा का उद्देश्य है–''ऐसी युवापीढ़ी का निर्माण करना जो शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो, जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सफलतापूर्वक प्राप्त कर सके और जीवन के पुरूषार्थ चतुष्टय (धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष) को अर्जित कर सके।''

शिक्षा के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वेद ने वृद्धि का विकास[7], अज्ञान को दूर करना[8], ज्ञान प्रदान करना[9], चिन्तन क्षमता मे वृद्धि[10], विश्व कल्याणकारी बुद्धि[11], शुद्धाचरण तथा सुचरित्र–निर्माण[12], विद्या और व्यवहार–बुद्धि का समन्वय[13], अध्यात्म और भौतिकवाद का समन्वय[14–16] तथा अनुशासन और समर्पण[17] उत्पन्न करने वाली शिक्षा को प्रतिपादित किया है। इनके विषय में विश्व के किसी भी समाज, देश, राष्ट्र का मतभेद नहीं हो सकता।

व्यक्ति और समाज (राष्ट्र) का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। आदर्श राष्ट्र में भी सर्वांगीण विकसित आदर्श व्यक्तियों का निर्माण होता है। इसलिए यजुर्वेद ने आदर्श राष्ट्र प्राप्ति की प्रार्थना में–

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योतिव्याधि महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्! योगक्षेमो नः कलपताम्।।

इस पर किसी कवि का पद्य अनुवाद भी है–

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्मतेजधारी। क्षत्रिय महारथी हों अरिदल विनाशकारी।।

होवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही। आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही।।

बलवान सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें। इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवें।।

फल–फूल से लदी हों ओषध अमोघ सारी। हों योग क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।।

इस प्रकार की कल्पनाएँ की गई हैं जिनका शिक्षा ही महत्वपूर्ण कारक है। वेद के इस उपाय–सूत्र ''मूल्याधारित शिक्षा'' के अतिरिक्त मानवोत्थान का अन्य साधन देखने को प्राप्त नही होता है।

सारांश :–

शिक्षा किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति का अनिवार्य अंग है। शिक्षा के द्वारा न केवल व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी शिक्षा से ही होता है। शिक्षा ज्ञान की साधना है। ज्ञान आत्मा का प्रकाश है। शिक्षा के उद्देश्य मनुष्य जीवन के उद्देश्यों से भिन्न नहीं है। शिक्षा एक प्रणाली है जिससे जीवन के

उद्देश्य प्राप्त होते हैं। शिक्षा मानव की उन अन्तर्निहित शक्तियों, कुशलताओं एवं गुणों का विकास करती है जिनसे वह अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है। मानव जीवन का लक्ष्य है ''धर्माचरण के द्वारा अर्थ और काम पुरूषार्थों की साधना करते हुए परमपुरूषार्थ 'मोक्ष' अर्थात् सत् चित् आनन्दस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति करें'' वैदिक शिक्षा की दृष्टि से विद्या का मुख्य उद्देश्य भी यही बताया गया है **''सा विद्या या विमुक्तये''** इस परम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु व्यावहारिक पक्ष की शिक्षा भी आवश्यक मानी गयी है। भारतीय विद्वानों की दृष्टि में शिक्षा का लक्ष्य जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण है। शिक्षा मानव को शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, आन्तरिक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करने वाली हो, इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इसे हमने 'मूल्याधारित शिक्षा' कहा है जिसके अन्तर्गत शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और आध्याम्मिक शिक्षा आदि समस्त विधाओं का समावेश है। उक्त सन्दर्भ को दृष्टिगत रखते हुए मैंने अपने शोध–पत्र का विषय ''मूल्याधारित शिक्षा का मानव व्यवहार पर प्रभाव : वेद के सन्दर्भ में'' बनाया है।

सन्दर्भ सूचि

1. ईशावास्योपनिषद्, 1/11
2. ईशावास्योपनिषद्, 1/9
3. नीतिसंग्रह–मित्रलाभः
4. ''भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता'' उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2002 ई0
5. वही, प्रकाशित लेख ''संस्कारों की वैज्ञानिक उपयोगिता, पृ0 39
6. यजुर्वेद, 40/41
7. अथर्ववेद, 7/16/1
8. ऋग्वेद, 10/182/3
9. वही, 1/6/3
10. वही, 10/53/6
11. यजुर्वेद, 17/74
12. अथर्ववेद, 19/11/2
13. ईशावास्योपनिषद्, 1/11, यजुर्वेद, 40/41
14. यजुर्वेद, 40/14
15. ईशावास्योपनिषद्, 1/14
16. मुण्डकोपनिषद्, 1/1/4,5
17. अथर्ववेद, 19/41/1
18. यजुर्वेद, 22/22